ORIGINAL RESEARCH PAPER

Arabic

KEY WORDS:

हज़रत उमर (रजि0) का महत्व : हदीस और कुरान के प्रकाश में

हुमा नाज़ उस्मानी शोध छात्रा अरब कल्चर विभाग लखनऊ विषवश्वविद्यालय

ABSTRACT

हज़रत उमर (रजि0) एक प्रभावषाली व्यक्तित्व के स्वामी थे। वह अत्यन्त न्यायप्रिय व्यक्ति थे। उनकी न्यायप्रियता के कारण ही उन्हें 'फारूक' (हक एवं बातिल को अलग करने वाला) की उपाधि से सुसज्जित किया गया। वह वास्तव में एक सत्यप्रिय व्यक्ति थे। उनकी विषेषता एवं महत्व इस बात से सिद्ध होती है कि स्वयं पैगम्बर मोहम्मद (सल0) ने आपको "या आख़ि" अर्थात् 'मेरा भाई' कहकर सम्बोधित किया।

वह इस्लाम धर्म के लिए एक महत्वपूर्ण स्तम्भ की भांति थे। उनके इस्लाम स्वीकार करने से इस्लाम धर्म को अत्याधिक बल मिला तथा मुसलमानों को कुफ़्फार से संरक्षण भी प्राप्त हुआ। जो कुफ़्फार मुसलमानों को प्रताड़ित करने का कोई भी अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे वह हज़रत उमर रजि0 के रौबीले स्वभाव के कारण मुसलमानों की तरफ आँख उठाने में भी संकोच करने लगे।

हज़रत उमर रजि0 के व्यक्तित्व को दर्षाने एवं इस्लाम में उनके महत्व को प्रदर्षित करने के लिए कुरान की कुछ आयतें एवं पैगम्बर मोहम्मद (सल0) की हदीसें इस लेख में अंकित की गई हैं।

हज़रत उमर (रजि0) की गिनती रसूलअल्लाह (सल0) के बाद इस्लाम के सर्वप्रथम व्यक्तियों में होती है। हज़रत उमर (रजि0) इस्लाम लाने से पहले भी अत्यन्त वीर एवं साहसी व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध थे और एक चरित्रवान व्यक्ति थे। शायद यही कारण है कि स्वयं रसूलअल्लाह (सल0) ने उनके ईमान लाने के लिए अल्लाह से दुआ की थी। हज़रत उमर (रजि0) के ईमान लाने का प्रभाव यह पड़ा कि अभी तक जो मुसलमान मक्का में अत्यन्त दयनीय स्थिति में थे, उन्होंने काबे में खुलेआम जमात से नमाज़ अदा की।

हज़रत उमर (रजि0) के सम्बन्ध में रसूलअल्लाह (सल0) की अनेक हदीसे हैं। यहां कुछ हदीसों का वर्णन किया जा रहा है जो उनके महत्व को दर्षाती हैं।

हदीसें –

- इब्न असाकिर ने इब्न अब्बास से रिवायत किया कि हज़रत मोहम्द (सल0) ने फरमाया कि आसमान के तमाम फ़रिष्ते उमर (रजि0) की इज्ज़त करते है और ज़मीन के सारे शैतान उनसे डरते हैं।
- इब्न असाकिर ने हज़रत आयषा सिद्दीका (रजि0) से रिवायत किया है रसूल अल्लाह (सल0) ने फरमाया – उमर (रजि0) से शैतान डरता है।
- बुख़ारी और मुस्लिम ने इस बात के हज़रत साद बिन अबि वक़ास से रिवायत किया है कि, हज़रत मोहम्मद (सल0) ने फ़रमाया– उमर मुझे मेरे ईष्वर की सौगन्ध है, जिस मार्ग पर तुम चलोगे, उस मार्ग पर शैतान नहीं चलेगा, वह अपना मार्ग बदल लेगा।
- इब्न माज़ा और हाकिम ने अबूज़र (रजि0) से रिवायत किया है कि – अल्लाह ने हज़रत उमर (रजि0) की ज़बान पर सच रख दिया कि वह सदा सच बोलते है।
- तिरमिज़ी ने इब्न उमर से रिवायत किया है कि मोहम्मद (सल0) ने फरमाया कि – उमर (रजि0) की ज़बान और दिल पर अल्लाह ने सच को जारी कर दिया है।
- हज़रत अबु हुरैरा कहते है कि हज़रत मोहम्मद (सल0) ने फरमाया कि – मैंने स्वप्न में स्वर्ग में एक महिला को एक महल के बाहर वज़ू करते देखा, मैंने पूछा कि यह महल किसका है, फ़रिष्तों ने जवाब दिया उमर (रजि0) का है। हज़रत मोहम्मद (सल0) ने फरमाया "उमर (रजि0) मैंने तेरे स्वाभिमान के कारण महल में पांव नहीं रखा। इस बात पर हज़रत उमर (रजि0) रो पड़े और बोले – मैं आपसे स्वाभिमान कैसे कर सकता हूँ। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है।

इस्लाम लाने से पहले भी हज़रत उमर (रजि0) की गिनती अरब के षिक्षित व्यक्तियों में होती थी। इस्लाम लोने के बाद रसूलअल्लाह (सल0) के साथ के कारण उनके धार्मिक ज्ञान में बहुत अधिक वृद्धि हुई। इस सम्बन्ध में दो हदीसें यह है –

- बुखारी और मुस्लिम ने इब्न उमर से रिवायत किया है कि – रसूलअल्लाह (सल0) ने स्वप्न देखा कि मैंने दूध पिया है, यहाँ तक कि उसकी ताज़गी एवं सुगन्ध नाखूनों तक फैल गई, फिर मैंने बचा हुआ दूध उमर को दे दिया। सहाबा ने पूछा इस स्वप्न का क्या अर्थ है? आप (सल0) ने फरमया ज्ञान।

हज़रत मोहम्द (सल0) ने फ़रमाया कि मैंने स्वप्न देखा कि लोगों को मेरे पास लाया जा रहा है। इनमें से कुछ की कमीज़ सीने तक है और कुछ की इससे ज्यादा। जब उमर को लाया गया तो उनकी कमीज़ ज़मीन पर घिसटती जाती थी"। सहाबा ने पूछा वह कमीज़ क्या थी? आप (सल0) ने फरमाया – दीन। इसे बुख़ारी और मुस्लिम ने हज़रत अबु सईद खुदरी (रजि0) से रिवायत किया है।

इन हदीसों के अतिरिक्त कुरान की कई आयतें हज़रत उमर (रजि0) की मंशा के अनुरूप नाजिल हुई है।

- इब्न उमर कहते हैं कि – जब भी लोगों में कुछ गलत होता और हज़रत उमर कुछ राय देते तो कुरान शरीफ़ हज़रत उमर की बात के अनुसार नाज़िल हुआ।
- कुरान शरीफ़ की सत्रह से अधिक आयतें हज़रत उमर (रजि0) के फ़ैसले के अनुरूप उतरी हैं।
- हज़रत अली रजि0 का कथन है, जिसे इब्न असाकिर ने नक़ल किया है कि – कुरान शरीफ में अक्सर हज़रत उमर (रजि0) की राए मौजूद है।
- इब्न उमर के अनुसार कभी–कभी लोगों का मत कुछ और होता और हज़रत उमर (रजि0) का कुछ और, कुरान शरीफ हज़रत उमर (रजि0) के मत के अनुसार नाज़िल हो जाता है।

कुरान शरीफ़ की वह आयतें जो हज़रत उमर (रजि0) के मत के अनुसार नाज़िल हुई, निम्न है –

- हज़रत उमर (रजि0) ने फ़रमाया "ऐ नबी (सल0) काष हम मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाते। इसके बाद यह आयत (और मकामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह पकड़ो) नाज़िल हुई।
- हज़रत उमर (रजि0) ने मोहम्मद साहब (सल0) से कहा कि आपकी पत्नियों से अच्छे और बुरे हर प्रकार के व्यक्ति मिलते हैं, तो आप अपनी पत्नियों को परदे का आदेष दें। इसके बाद परदे की आयत नाज़िल हुई।
- जब अब्दुल्लाह बिन अबि मरा तो लोगों ने मोहम्मद (सल0) से नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिए कहा। मोहम्मद साहब (सल0) जाने के लिए खड़े हुए तो, हज़रत उमर (रजि0) कहते हैं कि मैं भी खड़ा हो गया और बिल्कुल आपके (सल0) सामने जाकर कहा कि अबि इब्न काब आपका दुष्मन था, आप उसकी नमाज़े–जनाज़ा न पढ़ायें। थोड़ी ही देर हुई थी कि और "न पढ़ उनमें से एक पर", जब कभी मरें आयत नाज़िल हुई।
- जिस वक्त रसूल अल्लाह (सल0) एक क़ौम के पक्ष में अधिक प्रार्थना करने लगे तो हज़रत उमर (रजि0) ने कहा سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ तभी यह आयत नाज़िल हुई سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ इसे तिबरानी और इब्न अब्बास ने रिवायत किया है।
- बदर के युद्ध में मोहम्मद (सल0) ने जब सबसे सुझाव मांगा तो हज़रत उमर (रजि0) ने निकलने का सुझाव दिया। उस समय "जिस तरह निकाला तुझको तेरे रब ने तेरे घर से" आयत नाज़िल हुई।
- हज़रत मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत उमर से रिवायत की है कि अल्लाह ने कुछ बातों में मुझसे मुआफ़कत (समानता) की है – एक तो परदे का हुक्म, दूसरा जंगे बदर के सम्बन्ध में, तीसरा मकामे इब्राहीम, चौथा शराब बंदी। शराब बंदी के सम्बन्ध में मुस्तरक हाकिम ने इस प्रकार लिखा है कि "हज़रत उमर (रजि0) ने अल्लाह से दुआ की, कि शराब से सम्बन्धित कुछ आदेष हो, इसके बाद शराब के हराम होने पर आयत नाज़िल हुई"।
- हज़रत उमर (रजि0) ने फरमाया जब आयत لَقَدْ.....طِـــــينْ नाज़िल हुई तो मेरी ज़बान से फौरन निकला फताबारकल्लाहु खालिकीन। इसके बाद فَتَبَـــــارَكَ اللهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِينْ नाज़िल हुई।
- हज़रत उमर का इस्लाम के लिए कितना महत्व था इस सम्बन्ध में रसूलअल्लाह (सल0) की यह हदीसें पर्याप्त हैं।
- तिबरानी ने अबि इब्न कॉब से रिवायत किया है कि रसूलअल्लाह (सल0) का कथन है कि जिबरील कहते थे कि उमर (रजि0) की मौत पर इस्लाम रोएगा।
- तिबरानी ने अबु सईद खुदरी से रिवायत किया है कि मोहम्मद (सल0) ने फ़रमया जिसने उमर से द्वेश रखा उसने मुझसे द्वेश रखा, जिसने उमर से प्रेम किया, उसने मुझसे प्रेम किया।